बाइस्टैण्डर के व्यवहार को समझना: महिलाओं के विरुद्ध हिंसा खत्म करने के लिए कदम

एक अनुसंधान अध्ययन सारांश

Breakthrough

Act. End Violence Against Women.

ब्रेकथ्रू (Breakthrough) के बारे में

ब्रेकथ्रू (Breakthrough) महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा और भेदभाव को अस्वीकार्य बनाने के लिए काम करता है। अपने आसपास की दुनिया अधिक समानतापूर्ण बनाने के लिए हम किशोरों और युवाओं, उनके परिवारों और समुदायों के साथ काम करते हुए, तथा मीडिया अभियानों, कलाओं और लोकप्रिय संस्कृति का उपयोग करते हुए, जेंडर संबंधी मानदंडों को नया रूप देते हैं।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा खत्म करने के लिए बाइस्टैण्डर की ओर से सकारात्मक कदमों को बढ़ावा देना, ब्रेकथ्रू (Breakthrough) के लिए लगातार फोकस वाला क्षेत्र रहा है। हमारे ***बेल बजाओ*** अभियान में जहां घरेलू हिंसा के मामलों में बेल बजाने जैसे सरल उपायों द्वारा हस्तक्षेप करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया, वहीं हाल ही में हमारे ***'इग्नोर नो मोर' (Ignore No More)*** और ***'दखल दो'*** अभियान बाइस्टैण्डर की गतिविधियों पर केंद्रित रहे।

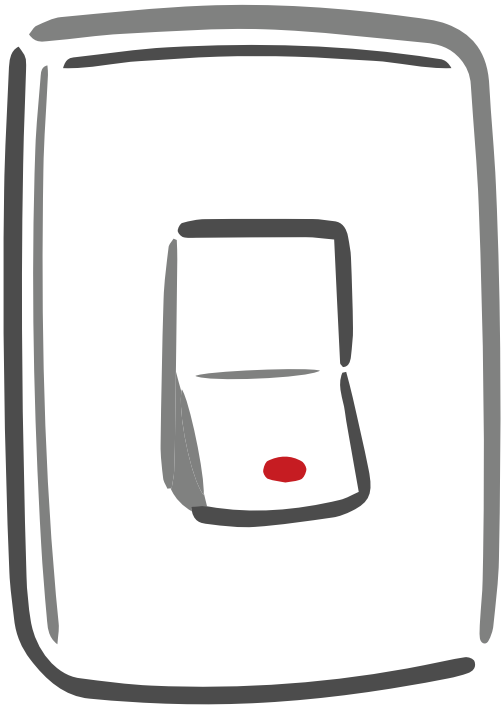

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमारे लिए उन वजहों को बेहतर समझना ज़रूरी है, जो विशेषकर महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के संदर्भ में बाइस्टैण्डर्स को हस्तक्षेप करने के लिए प्रेरित करते हैं या उनको ऐसा करने से रोकते हैं। इस मसले को लेकर, विशेषकर भारतीय संदर्भ में मौजूदा अध्ययन सामग्री का अभाव होना, इस अध्ययन को उचित और महत्वपूर्ण ठहराता है।

अनुसंधान के प्रश्न

- लोगों को किसी सार्वजनिक स्थान पर हो रहे हिंसक कार्य, जिसके वे गवाह होते हैं, की रोकथाम करने के इरादे से दखल देने के लिए, कौन सी वजहें प्रेरित करती हैं?
- लोगों को किसी सार्वजनिक स्थान पर हो रहे हिंसक कार्य, जिसके वे गवाह होते हैं, की रोकथाम करने के इरादे से दखल देने से, कौन सी वजहें रोकती हैं?
- सार्वजनिक स्थानों और परिवहन में हिंसा झेलने वाले लोगों के अनुभव कैसे होते हैं?

पद्धति

डाटा संकलन की विधियां:

- **गहराई से, क्वालिटेटिव इंटरव्यू (in-depth qualitative interviews):** हिंसा के साक्षी बनने पर बाइस्टैण्डर्स के विचारों और अनुभवों के बोध को समझने के लिए, और यह कि ये हस्तक्षेप करने या न करने के बारे में उनके निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- **डिजिटल सर्वेक्षण:** मुद्दे के बारे में व्यापक रूझान समझने के लिए।

सैम्पल:

अध्ययन प्रतिभागियों को चुनने की विधि में इस तथ्य पर विचार किया गया कि प्रतिभागियों की श्रेणियां, बाइस्टैण्डर के हस्तक्षेप पर ब्रेकथ्रू (Breakthrough) के कार्य के लक्षित वर्ग वाली होनी चाहिए – 19-25 वर्ष आयु समूह वाले युवा। यह प्रतिभागियों की प्रथम दो श्रेणियों में परिलक्षित होता है। भारतीय समाजों में आयु को दिए जाने वाले उल्लेखनीय महत्त्व, तथा महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मामलों में हस्तक्षेप करने के संबंध में इसका लाभ उठाने की संभावनाओं को देखते हुए, हमने विचार किया कि अधिक आयु वाले पुरुष और महिला प्रतिभागियों को सम्मिलित करना उपयोगी हो सकता है।

- 19-25 वर्ष आयु समूह वाली लड़कियां/महिलाएं
- 19-25 वर्ष आयु समूह वाले लड़के/पुरूष
- 26-40 वर्ष आयु समूह वाले पुरूष
- 26-40 वर्ष आयु समूह वाली महिलाएं
- 40[1] वर्ष से अधिक आयु वाली महिलाएं

इंटरव्यूज का आयोजन या तो इंटरनेट आधारित वीडियो–कॉलिंग प्लेटफार्मों या निजी और कॉन्फ्रेन्स फोन–कॉलों के माध्यम से किया गया, क्योंकि रिसर्च टीम, कोविड–19 लॉकडाउन के कारण डाटा संकलन के लिए यात्रा नहीं कर सकती थी।

हमने निम्न स्थानों पर कुल 91 प्रतिभागियों के इंटरव्यू लिए:

- ग्रामीण हजारीबाग जिला (झारखंड)
- ग्रामीण गया जिला (बिहार)
- ग्रामीण झज्जर जिला (हरियाणा)
- दिल्ली की एक शहरी सीमांत बस्ती
- शहरी दिल्ली और हरियाणा से, कॉलेज जाने वाली महिलाओं का एक समूह
- कोलकाता
- हैदराबाद
- मुम्बई
- दिल्ली

प्रथम पांच स्थानों को इसलिए चुना गया क्योंकि ये वे क्षेत्र हैं जहां ब्रेकथ्रू (Breakthrough) ज़मीनी स्तर पर कार्य करता है। अंतिम 4 महानगरीय क्षेत्र, देशव्यापी दृष्टिकोण समझने के लिए चुने गए।

डिजिटल सर्वेक्षण को हमारे सोशल मीडिया हैंडलों से प्रसारित किया गया और इसमें कुल **721 लोगों ने जवाब दिए।**

[1] संभावित प्रतिभागियों को खोजने के लिए पार्टनर संगठनों के नेटवर्कों से अनुरोध किए गए। संपर्क करने और अध्ययन प्रतिभागियों को शामिल करने की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप कुछ ऐसे प्रतिभागी सम्मिलित हो गए, जो 40 वर्ष से अधिक आयु के थे, जो कि अध्ययन के सैम्पल के लिए नियोजित ऊपरी आयु–सीमा थी।

मूल निष्कर्ष

अधिकांश प्रतिभागियों (विशेषकर महिलाओं) ने हिंसा को विविध प्रकार के अनुभवों–शारीरिक, मानसिक, मौखिक और यौन, के समावेश वाले एक व्यापक शब्द के रूप में माना। यह महिलाओं की ज़िंदगी में जेंडर आधारित हिंसा की व्यापक और गहरी मौजूदगी का संकेत करता है। इंटरव्यूज से यह भी पता चला कि पितृसत्तात्मक प्रथाएं, सांस्कृतिक संदर्भों से काफी प्रभावित होते हैं और बिगड़ते मानसिक स्वास्थ्य और रोज़ाना के स्त्री–द्वेष के बीच के आपसी संबंध पर कई महिलाओं ने हमसे मार्मिक ढंग से बात की।

लोग क्यों हस्तक्षेप करते हैं?

हस्तक्षेप करने वाले व्यक्तियों ने अपनी कार्यवाहियों के कई कारण बताए:

- **'सही' कार्य करने की प्रेरणा**, आवाज़ उठाने में एक प्रबल नैतिक तत्व की मौजूदगी साबित करती है।
- हमारे कुछ प्रतिभागी जो बाल यौन शोषण और घरेलू हिंसा के पीड़ित थे, उन्होंने बताया कि हादसों के समय अपनी असहायता को लेकर उनके मन में **रोष** भरा हुआ था, और जब उन्होंने फिर से उनके अपने साथ या किसी अन्य के साथ यह दुर्व्यवहार या यौन हिंसा होते देखा तो उस रोष की वजह से उनका क्रोध प्रबल हो उठा।
- कुछ (पुरुषों और महिलाओं दोनों) लोगों ने बेहतर **जेंडर संवेदीकरण की दिशा में** अपनी सोच के बारे में भी बात की। हिंसा के कुछ विशेष प्रकारों की पहचान करने, और उलझी हुई जेंडर गतिशीलताओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था में इसके लक्षणों को समझने में प्रायः उनको वर्षों का समय लगा।
- कुछ लोगों ने **जेंडर संबंधी अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठनों** में स्वयंसेवियों, पूर्णकालिक कर्मचारियों के रूप में अपने जुड़ाव को, या ऐसे क्षेत्रों और मुद्दों से प्रायः संपर्क और अनुभव को इसका श्रेय दिया।

मुम्बई स्थित एक प्रतिभागी और सामाजिक कार्यकर्ता ओनिल ने हमें बताया कि किस तरह से उन्होंने ऑफिस में यौन उत्पीड़न प्रकोष्ठ स्थापित करने की प्रक्रिया में भाग लिया और उनकी एक महिला सहकर्मी से बातचीत से उनको पहली बार 'सहमति' की धारणा पर विचार करने में मदद मिली। यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ क्योंकि इससे वे इस अवधारणा के बारे में, तथा जेंडर संबंधी अधिकारों के प्रति इसके महत्त्व के बारे में व्यापक अध्ययन करने के लिए प्रेरित हुए।

लोगों ने किस प्रकार हस्तक्षेप किया?

एक 'सक्रिय' बाइस्टैण्डर के नज़रिए से, हस्तक्षेप की रणनीतियां और विधियां अनेक वजहों, जैसे कि जेंडर, आयु, सामाजिक–आर्थिक स्तर, जेंडर संबंधी अधिकारों के बारे में जागरूकता आदि से प्रभावित होती हैं। प्रतिभागियों (सिस जेंडर पुरुष और सिस जेंडर महिला, दोना) जिन्होंने हस्तक्षेप करने का अनुभव प्राप्त किया, उन्होंने सर्वाइवर्स की मदद करने की दिलचस्प विधियां बताईं। प्रायः **आवाज़ उठाने और शोषणकर्ता को डांटने से**, हादसे को रोकने के मामले में बड़ा प्रभाव देखा गया। अन्य तात्कालिक प्रकार के हस्तक्षेपों में निम्न शामिल थेः

1. सर्वाइवर/पीड़िता से **सीट बदलना**ः जेंडर हिंसा की परिस्थिति का शांतिपूर्वक सामना करना महत्वपूर्ण था, विशेषकर सर्वाइवर के नज़रिए से।
2. बाद में संपर्क करने के लिए **अपना मोबाइल नंबर देना** (विशेषकर निजी पार्टनर द्वारा हिंसा के मामलों में दखल देने पर, जहां महिलाओं को उनके अगले कदम पर सोच–विचार करने के लिए समय चाहिए होता है।)
3. सर्वाइवर को **चिकित्सकीय मदद** के लिए लेकर जाना।
4. किसी का उत्पीड़न किए जाने की स्थिति में उसके साथ जाकर **सुरक्षित रुप से उसके घर तक छोड़कर आना।**
5. **हिंसा का सहारा लेना या पितृसत्तात्मक कथन प्रयोग करना, जैसे कि** *"क्या तुम्हारे घर में मां–बहन नहीं है?"*

हमारे कुछ प्रतिभागियों ने लंबे समय के लिए समाधान की तरकीबों के रूप में अपनाई गई कुछ अन्य विधियों के बारे में भी बताया। दिल्ली के एक **30** वर्ष आयु के शिक्षक शकील द्वारा बताई गई लंबे समय की हस्तक्षेप रणनीति **में सामुदायिक एकजुटता** शामिल थी। उनकी छात्राओं ने जब उनको यह बताया कि स्कूल के आसपास छेड़खानियों की हरकतों की वजह से उनको स्कूल आने में कठिनाई होती है, तो भीड़ के समय उन्होंने अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर गश्त लगानी शुरू कर दी। उन्होंने पुलिस की भी मदद ली और नियमित गश्त सुनिश्चित कराई। उन्होंने बताया कि इससे लड़कियों को सुरक्षा के अहसास के साथ स्कूल आने में मदद मिली।

सर्वाइवर को आवाज़ उठाने में मदद करने के लिए बाइस्टैण्डर द्वारा उठाए गए कदमों की भूमिका

- **सामाजिक मानदंडों की भूमिकाः**

हस्तक्षेप का अनुभव करने वाले अनेक प्रतिभागियों ने दुर्व्यवहार और यौन हिंसा के अधिकांश पीड़िताओं की 'चुप्पी' पर खीझ व्यक्त की। हमारे कुछ प्रतिभागियों ने **महिलाओं के व्यवहार और 'विकल्पों' को प्रभावित करने के मामले में संरचनात्मक और सामाजिक अनुकूलन द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका** को स्वीकार किया। हमारे अध्ययन के प्रतिभागियों ने बताया कि किस तरह से लड़कियों को बचपन से ही आज्ञाकारी रहना, और अपनी परिस्थितियों को मुखरता के साथ चुनौती न देना सिखाया जाता है। तथापि यहां यह बताना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि वह व्यापक प्रक्रियाओं की उपज होती है, लेकिन वह महज एक असहाय 'पीड़िता' नहीं, बल्कि एक जटिल व्यक्तित्व होती है जो अनेक सूक्ष्म और छिपे तरीकों से इन कठिनाइयों का सामना करती है।

- **महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और बच्चों के विरुद्ध हिंसा का आपसी संबंधः**

जैसा कि ऊपर कहा गया है, हमारे कुछ प्रतिभागियों ने, जो बाल यौन शोषण और घरेलू हिंसा के पीड़ित थे, ने बताया कि हादसों के समय अपनी असहायता को लेकर उनके मन में रोष भरा हुआ था, और इस रोष ने उन्हें महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मामलों में दखल देने के लिए उन्हें आक्रोशित कर दिया। तथापि, कुछ प्रतिभागियों ने कभी भी दुर्व्यवहारपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने को लेकर अपनी गहन पीड़ा व्यक्त की। हमारी एक प्रतिभागी, जो बाल यौन शोषण की सर्वाइवर थी, ने मार्मिक ढंग से हमें बताया कि किस तरह से जब एक व्यक्ति उनको अनुचित प्रकार से स्पर्श करता था, तो हर बार वह **'जड़' हो जाती थीं और किसी तरह की प्रतिक्रिया करने में असमर्थ** हो जाती थीं।

पुरूष और महिला बाइस्टैण्डर्सः क्या इनके तरीकों में कोई अंतर होता है?

पुरुषों और महिलाओं की प्रतिक्रिया और हस्तक्षेप करने के तरीकों में एक दिलचस्प अंतर निकल के आया। अधिकांश पुरुषों ने, जिनसे हमने बात की, उन्होंने अपरिचित महिलाओं के लिए एक 'अजनबी' के तौर पर हस्तक्षेप करने की कठिनाइयों के बारे में बताया। अन्य निश्क्रिय बाइस्टैण्डर्स ने प्रायः ऐसी लड़की के लिए आवाज़ उठाने के लिए हस्तक्षेप करने वाले आदमी के 'अधिकार' के बारे में, जिस आदमी से वह लड़की साफ तौर पर असंबंधित हो, आक्रामक तरीके से प्रश्न किया। कुछ पुरूषों ने एक महत्वपूर्ण वजह के रूप में उनकी स्वयं की सुरक्षा संबंधी चिंताओं की भी चर्चा की। इस वास्तविकता ने सचमुच कुछ पुरुष बाइस्टैण्डर्स को हस्तक्षेप के लिए **'विश्वसनीयता'** प्राप्त करने के लिए सर्वाइवर से नातेदारी या रोमांटिक संबंध प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित किया।

कुछ पुरुषों ने ऐसे सर्वाइवर्स को लेकर भी कठिनाई पर बात की, जो अपने साथ हुई घटना को लेकर बोली नहीं थीं। कुछ ने इस पर जोर दिया कि तब परिस्थितियां किस कदर उलझ गईं, जब उनके हस्तक्षेप के बावजूद, कुछ महिलाएं यह स्वीकार ही नहीं कर सकीं, कि दुर्व्यवहार हुआ था। एक पुरुष बाइस्टैण्डर ने हमें बताया कि ऐसे ही एक अनुभव ने उसे पीड़िता के ध्यान में मामला लाए बिना परिस्थिति से **शांतिपूर्वक निबटने के तरीकों** पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। यह चुपचाप हस्तक्षेप करने की उसकी रणनीति थी। यह दूसरे एक समान मामले के विपरीत है जिसमें एक महिला बाइस्टैण्डर ने अत्यधिक मुखरता के साथ हस्तक्षेप किया। एक साझा आटो में एक लड़की को पुरुष सहयात्री द्वारा परेशान किए जाते देखकर **22** वर्ष की अरूणा, उत्पीड़न करने वाले से सीधे उलझ गईं।

सार्वजनिक परिवहन में महिलाओं द्वारा यौन हिंसा से स्वयं निबटने के संदर्भ में, उन्होंने **सेफ्टी पिन** जैसी रोजमर्रा की चीज़ों को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने के बारे में बात की। महिला यात्रियों ने अन्य महिला सहयात्रियों के साथ बंधुत्व की भावना भी प्रदर्शित की और पीड़िता को चर्चा का केंद्र बनाए बिना रणनीतिक तरीके से और **चुपचाप आगे निकाल दिया या एक ओर कर** दिया। संभावित खतरनाक या हिसंक परिस्थितियों से दूर रहना, यात्रा करने के दौरान महिलाओं द्वारा अपनाई जाने वाली एक सामान्य सर्वाइवल रणनीति है।

एक पुरुष बाइस्टैण्डर ने हमें बताया कि ऐसे ही एक अनुभव ने उसे पीड़िता के ध्यान में मामला लाए बिना परिस्थिति से शांतिपूर्वक निबटने के तरीकों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। यह चुपचाप हस्तक्षेप करने की उसकी रणनीति थी। यह दूसरे एक समान मामले के विपरीत है जिसमें एक महिला बाइस्टैण्डर ने अत्यधिक मुखरता के साथ हस्तक्षेप किया।

सर्वेक्षण के परिणाम

78.4%

महिलाओं या अन्य जेंडर वाले (पुरुष नहीं) उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा का अनुभव किया (सार्वजनिक परिवहन शामिल नहीं)।

68.0%

महिलाओं या अन्य जेंडर वाले (पुरुष नहीं) उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने सार्वजनिक परिवहन माध्यम में यात्रा करने के दौरान हिंसा का अनुभव किया।

70.0%

70% उत्तरदाताओं ने बताया कि वे जेंडर आधारित हिंसा के मामलों में दखल देकर/आवाज़ उठाकर (निजी या समूह में) मदद करना पसंद करेंगे।

कितने लोगों ने हस्तक्षेप किया* और क्यों?

54.6% उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने सार्वजनिक स्थान पर महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटना होने पर हस्तक्षेप किया।

- 55.3% उत्तरदाताओं ने हिंसा का सामना करने वाली महिला/लड़की की परेशानी का अहसास किया।
- 67.7% उत्तरदाताओं ने बताया कि उनके हस्तक्षेप की वजह से हिंसा रूकी।

कितने लोगों ने हस्तक्षेप नहीं किया और क्यों?

45.4 % उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटना में हस्तक्षेप नहीं किया।

- 38.5% उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्होंने इसलिए हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि उनको पता ही नहीं था कि क्या करना चाहिए।
- उनमें से 31% ने बताया कि वे अपनी खुद की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे।
- उनमें से 11.5% ने महसूस किया कि उनको पुलिस/कानूनी पचड़ों में घसीटा जा सकता है।

* हस्तक्षेप को कोई हिंसक कार्य रोकने के लिए किया जाने वाला प्रयास माना जा सकता है, जैसे कि बीच–बचाव करके इसे खत्म करना, आवाज़ उठाना, या इसकी तरफ ध्यान दिलाना, या पुलिस आदि को सूचित करना।

बाइस्टैण्डर को कदम उठाने के लिए प्रेरित करने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

- संरक्षण के तरीके के बजाय **महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने** में निवेश पर बल दिया जाना चाहिए। सरकार को, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मामलों में निजी उपायों और व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम शुरू करने चाहिए, जैसे कि *फरिश्ते दिल्ली के स्कीम।*

- रिपोर्टिंग सिस्टम सरल बनाने, रिपोर्टिंग के तरीकों का व्यापक प्रचार–प्रसार करने, सर्वाइवर और बाइस्टैण्डर की सुरक्षा सुनिश्चित करने और वाहनों या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रिपोर्टिंग के साधन स्थापित करने के उपाय होने चाहिए। इससे **सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा की रोकथाम के अनुकूल माहौल बनाने में मदद मिलेगी।**

- **पुलिस कर्मचारियों को जेंडर के संबंध में संवेदनशील बनाना,** बेहतर सामुदायिक कदमों के लिए **नागरिक–पुलिस संवाद।**

- **स्कूली शिक्षा में जेंडर संबंधी संवेदनशीलता के पाठ शामिल किए जाएं।** अभिभावकों में जेंडर को लेकर समानता की सोच विकसित की जाए।

- महिलाओं और लड़कियों के विरुद्ध हिंसा की रोकथाम के लिए **सिस्टम में, और पॉलिसी के स्तर पर** बदलाव करने की ज़रूरत है।

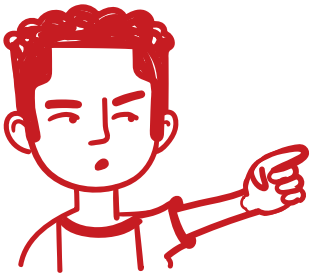

संरक्षण के तरीके के बजाय महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने में निवेश पर बल दिया जाना चाहिए। सरकार को, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के मामलों में निजी उपायों और व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम शुरू करने चाहिए, जैसे कि *फरिश्ते दिल्ली के स्कीम।*

Breakthrough

Act. End Violence Against Women.

डाटा संकलन पार्टनरः

रंगीन खिड़की फाउंडेशन

माय चॉयसेज फाउंडेशन

हैबिटेट एंड लाइवलीहुड वेलफेयर एसोसिएशन

रिपोर्ट का डिजाइनः

अनीस सैयद

समर्थनकर्ताः

Uber | IKEA Foundation

www.inbreakthrough.org

+91-11-41666101-06 | contact@breakthrough.tv | प्लॉट 3, DDA कम्युनिटी सेंटर,

ज़मरूदपुर, नई दिल्ली, दिल्ली- 110048

ब्रेकथ्रू इंडिया